

उमा शंकर जोशी



उमाशंकर जोशी का जन्म गुजरात के साबरकंठ जिला, ईदार तालूक के बामना नामक गांव में हुआ था। उनके पिता का नाम जेठालाल कमलजी और माता का नवलबाई था। उन्होंने अर्थशास्त्र और इतिहास में स्नातक की उपाधि हासिल की। उसके बाद मुम्बई विश्वविद्यालय से गुजराती और संस्कृत में एम.ए. किया।

उन्होंने गांधी जी द्वारा चलाए गए स्वतंत्रता संग्राम में भी भाग लिया। वर्ष 1929 में गुजरात कॉलेज के छात्रों द्वारा प्रारंभ की गई 34 दिनों की हड़ताल में भाग लेकर स्वतंत्रता संग्राम में शामिल हुए। वर्ष 1930 में वे एक सत्याग्रही के रूप में वीरांगम कैंप में भर्ती हुए। नवम्बर, 1930 में साबरमती जेल में तथा वर्ष 1931 में येरवाडा के टेंट जेल में 14 सप्ताह के लिए उन्हें कैद किया गया। वर्ष 1932 में साबरमती और विसापुर जेलों में आठ महीनों के लिए कैद किए गए।

उन्हें प्राकृतिक सौन्दर्य और गांवों के सामाजिक जीवन तथा वहां के मेला-उत्सव से क्रियात्मक लेखन लिखने के लिए प्रेरणा मिली। वे गुजराती साहित्य परिषद के अध्यक्ष (1968), साहित्य अकादमी के अध्यक्ष (1978-1982), गुजरात विश्वविद्यालय के उप कुलपति (1970) और राज्य सभा के सदस्य भी रहे।

उनकी प्रमुख कृतियां हैं- निशीथ (काव्य संग्रह), गंगोत्री, विश्वशांति, महाप्रस्थान, अभिज्ञ, विसामो- कहानी संग्रह, हवेली-नाटक संग्रह, श्रावणी मेलों- कहानी संग्रह तथा संस्कृति-पत्रिका के संपादक भी रहे।

प्रशस्ति एवं पुरस्कार- ज्ञानपीठ पुरस्कार (निशीथ-काव्य संग्रह, 1968) रंजितराम सुवर्ण चंद्रक (1947), सोवियतलैंड नेहरू प्रशस्ति (1973) दिल्ली साहित्य अकादमी प्रशस्ति।

उन्हें कैंसर होने के कारण टाटा मेमोरियल अस्पताल, मुम्बई में भर्ती कराया गया। 77 वर्ष की आयु में 19 दिसम्बर, 1988 को उनका निधन हुआ।